रिकॉर्डः— दिल का सहारा टूट न जाये.....ॐ पिता श्री 2/9/62

ओम् शांति! बच्चों ने गीत सुना। इस गीत का अर्थ बच्चे समझ सकते हैं। वो ही बच्चे जिन्होंने बेहद के मोस्ट बिलवेड गॉड फादर को पहचाना है। वे बच्चे कहते हैं, बाबा यह जो रावण की दुनिया है, बड़ी दुश्मन है। यह तो हम जानते हैं बरोबर युद्ध के मैदान में खड़े हैं इस दुःख देने वाली माया पर जीत पाने। सहारा भी उनका लिया है, तो ऐसे नहीं कि माया परमपिता **P.** से हाथ छुड़ा ले। कल्प पहले भी तुम बच्चों ने ही आकर बाप की गोद ली थी। मोस्ट बिलवेड परलौकिक **P.P.P.** है जिसको आधा कल्प भक्तिमार्ग में याद करते आए हो। भक्तों को मेहनत का भाड़ा देने वाला वो है। मेहनत का एवज़ा तो ज़रूर मिलता ही है। अब सबसे ज़्यादा भक्ति किसने की। यह सब राज़ बाप बैठ समझाते हैं। एक है ज्ञान, दूसरी है भक्ति। सत्युग—त्रेता में है ज्ञान की प्रारब्ध, जो तुम बच्चे 21जन्मों की अपनी प्रारब्ध बना रहे हो पारलौकिक बाप द्वारा। फिर तुम्हीं पहले—2 भक्ति में आते हो। अब तुम बच्चे जानते हो कि यह पुरानी दुनिया अब खलास होनी है। कहते भी हैं, 5000वर्ष पहले महाभारत की लड़ाई लगी थी ज़रूर; परंतु क्या हुआ था? फिर क्या स्थापना हुई थी? यह कोई बता नहीं सकते। यह भी कहते हैं, लड़ाई के बाद सत्युग की स्थापना हुई थी। अब विनाश तो होना है ज़रूर। विनाश के पहले बेहद के बाप से प्यार रखना चाहिए। बाप अब सम्मुख बात कर रहे हैं; परंतु वो अशरीरी हैं। उनको अपना कोई जिस्म नहीं। इस तन द्वारा बच्चों को समझा रहे हैं, 5000वर्ष पहले मुआफिक। गीत भी यह अनेक प्रकार के सब बाबा ने बन.... हैं अर्थ समझाने लिए। जैसे ड्रामा भी पहले नहीं था, पीछे हुआ, तो अभी इस बेहद ड्रामा पर उस ड्रामा मिसल बतलाते हैं। वो है छोटा हद का ड्रामा। यह है बेहद का बना बनाया ड्रामा। वो ही बना हुआ ड्रामा चक्र लगाते रहते हैं। जो नॉलेज बाप ही बतलाते हैं। तो बच्चे इस विराट ड्रामा को जानते हो। ड्रामा की आदि है नई दुनिया की स्थापना, आदि सनातन देवता धर्म की स्थापना और ड्रामा का अंत कहा जाता है कलियुग को। बाप अंत में ही आकर समझाते हैं जबकि सभी बच्चे हैं। यह समझाई सब जगह जावेगी। बच्चों को बहुत निर्भय भी रहना है। योग में रहने से बच्चों की सलामती है। सदा सलामत रहना है। आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा जाकर लेती है वो तो कॉमन बात है। फिर जैसे रात बदलकर दिन होता है। दिन बदल रात होती है। यह कल्प भी ऐसे है। मुनष्य जानते हैं यह है पुरानी दुनिया। सत्युग था नई दुनिया। दुनियाएँ कोई बहुत नहीं हैं। दुनिया एक ही है। घर नया होता है सो फिर पुरना होता है। सत्युग से नई मनुष्य सृष्टि स्थापन होती है। पुरानी दुनिया में तो अभी हम सब हैं। यहाँ ही नई दुनिया थी। यह भी कई समझेंगे बरोबर आदि सनातन देवता धर्म सत्युग में था। उनको कहा जाता है अहिंसा परमो धर्म का राज्य। गाँधी भी नई दुनिया में नया राज्य माँगते थे; किन्तु वो क्रियेटर तो नहीं था ना। नई दुनिया बनाना तो क्रियेटर का काम है। यह भी समझाया गया है कि एक हैं अंधे व रावण की औलाद, दूसरे सच्चे अर्थात् राम की औलाद। गीता में भी कुछ बातें तो ठीक हैं ना। अच्छा कोई **K.** को ही माने। वे भी कहते हैं यह दुनिया आसुरी सम्प्रदाय है और वो है दैवी सम्प्रदाय। भगवान की मुखवंशावली लिए कहते हैं दैवी सम्प्रदाय। कुखवंशावली है माया की। वे विख से पैदा होते हैं। उनके लिए कहते हैं आसुरी सम्प्रदाय। भगवानुवाच्य है ना, आसुरी सम्प्रदाय का विनाश और दैवी सम्प्रदाय की स्थापना हुई। यह तो भगवान समझाते हैं ना। ईश्वर सर्वव्यापी कहना यह तो कुछ भी ज्ञान नहीं। बेहद का बाप तो ज्ञान देते हैं। जिसके पास जो शिफ्ते है वो ही देंगे। बाबा ने समझाया है बरोबर भारत में देवी—देवताओं का राज्य था। अब फिर से स्थापना हो रही है। ..... पर्सनली आते हैं आकर

इस पर्सन का आधार लेते हैं। कहते हैं मीठे बच्चे, कल्प पहले भी मैंने तुमको ज्ञान दिया था, फिर दे रहे हैं। तुम पहले–2 नई दुनिया में आवेंगे। तुम ठहरे सिकीलधे। गाया भी जाता है आत्मा **P.** अलग रहे बहुकाल सिर्फ कहना तो सहज है; परंतु कौन सी जीवात्माएँ **P.** से बहुकाल अलग रहीं। यह है हिसाब। मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ में पहले पत्ते अवश्य पहले उतरे होंगे ना। फिर हमको ही बाप आकर मिलते हैं। अब तुम्हारी बुद्धि में ज्ञान तो पूरा है। जानते हो शिवबाबा है निराकार। ब्र.वि.शं. सूक्ष्म वतनवासियों का भी तुमको सा॰ होता है। पहले सूक्ष्मवतन ज़रूर चाहिए, फिर है मनुष्य सृष्टि। अब बरोबर हम ट्रांसफर हो रहे हैं। कलम लग रहा है। मनुष्य से देवता बन रहे हैं। जो देवताएँ थे वो मनुष्य बने, फिर देवता बन रहे हैं। तुमको कलश दिया है कि असुर को देवता बनाओ। बाकी असुर कोई और मनुष्य नहीं होता है। मनुष्य तो मनुष्य ही है। जैसे साँग बनाते हैं ना। एरोप्लेन में ड्रेसेस ऐसे पहनकर जाते हैं जैसे खौफनाक शक्ल आदि, पता नहीं कैसे हो जाती है। तो बाप बैठ समझाते हैं तुम बच्चों की बुद्धि में सारा दिन स्वदर्शन चक्र फिरना चाहिए। माया भी कम नहीं है। बाबा से बुद्धियोग तोड़ा तो तकदीर को लकीर लग जावेगी। माया को लकीर लगाने की युद्ध करते हैं तो, बच्चे कहते हैं–माया रावण हमको छीन न ले। बहुत अच्छे–2 बच्चे हार खाकर चले गये। हमारा भी ऐसा हाल न हो जो तकदीर में लकीर लग जाये। बाप को पूरा याद न करेंगे, औरों को नॉलेज न देंगे तो ज़रूर माया चमाट मारेगी। कुछ न कुछ रोला है। यह दुनिया तो बड़ी गंदी है। सब तरफ देखो, लड़ाइयाँ, झगड़े चलते रहते। सत्युग में यह उपद्रव होते नहीं। यह उपद्रव मचाते हैं माया 5विकार। इसलिए गाया जाता है–दे दान तो..... बाबा कहते हैं, विकारों का दान हमको दे दो। मंसा संकल्प तो बहुत आवेंगे, कर्मणा में न आना है। संकल्प का कर्म नहीं बनता है। कर्मेन्द्रियों से गंदा काम कर दिया तो फिर तकदीर में लकीर लग जावेगी। गोद लेने बाद वर्सा तो ज़रूर मिल जावेगा; परंतु पुरुषार्थ कर ऊँच वर्सा लेना है, इसके लिए है पढ़ाई। लौकिक बाप के पास तो गोद लेने से ही प्रॉपर्टी के मालिक बन जाते हैं, यहाँ ऐसे नहीं है। वो तो एक बाप का एक ही वर्सा बच्चे को मिल जाता। यहाँ तो एक बाप का अनेक बच्चों को वर्सा मिलता है। सारी राजधानी स्थापन होती है। इसमें जितना पुरुषार्थ करेंगे, उतना ही पद पावेंगे। रेस(दौड़) होती है ना। यह भी हार–जीत का खेल है बेहद का। खेल में भी जो फर्स्ट नम्बर बहुत तीखा दौड़ते हैं उनको गोल्डन मैडल मिलता है। सैकण्ड नम्बर को सिल्वर मैडल। तो यहाँ भी ऐसे है। जितना जो दौड़े। जितना बाप के साथ बुद्धियोग लगावेंगे, ज्ञान की धारणा कर और करावेंगे, उतना पहले नम्बर में जावेंगे। नम्बरवार तो हैं ही। अपने दिल से पूछना है, हम कैसे तीखी दौड़ पहन बाप के गले का हार बनूँ? पुरुषार्थ पर मदार है। फॉलो फादर–मदर। ऐसे नहीं कहेंगे, फॉलो और बच्चे। नहीं, फॉलो फादर–मदर कहा जाता है। मम्मा–बाबा मुरली चलाते हैं, सर्विस पर जाते हैं, तो पहले–2 उन्हों का संग करना चाहिए, फिर सीख जावेंगे। अच्छा, फिर और भी राय दी जाती है। जो तीखे बच्चे हैं उनसे भी सीखना चाहिए। रेस में सदा कोशिश की जाती है पहले नम्बर वाले को पकड़ने की। अच्छा फिर सैकण्ड नम्बर को। गोल्ड नहीं तो सिल्वर मैडल तो मिलेगा ना। एक/दो से ज्यादा दौड़ना है। गोद तो ली है। जानते हैं वण्डरफुल बाप है, उनको बुद्धि से जानते हैं। आत्मा जानती है, हमारा बाप हमको मिला है। कल्प पहले भी पढ़ाया था। फिर पुरुषार्थ करना है। ऐसे नहीं कि जो नसीब में होगा। पुरुषार्थ बहुत करना है। अभी तुम हो ब्राह्मण, फिर देवता बनेंगे। जानते हो, सत्युग के बाद फिर कलियुग में आना ज़रूर है। सतोप्रधान से सतो, रजो, तमोप्रधान में ज़रूर आना है। गिरना है। झाड़ के पत्ते भी पुराने जड़–जड़ीभूत हो जाते हैं। बुद्धि जानती

है कि यह दुनिया बाकी थोड़ा समय है। पुरानी दुनिया के विनाश अर्थ यह नेचरल कैलेमिटीज़, अर्थ क्वेक आदि होती है। इसमें डरने की बात नहीं। अपनी जांच करनी है। (ममप्राणों कल रात को 3½ बजे यहाँ भूकम्प आया है, धरती हिली थी। पहली बार तो एक मिनिट हिली, फिर थोड़े–2 समय के बाद, टोटल 4 बार धक्का आया।) हमको उस समय क्या याद आया? अवस्था क्या रही? धरती हिली वा मौत आया तो झट शिवबाबा को याद करना चाहिए। हमको तो शिवबाबा के पास जाना ही है। योग में रहते शरीर छूट जाये तो अच्छा ही है। डरने की कोई बात नहीं। और मनुष्य तो डरके मारे भागेंगे। अपने जानते हैं यह सब होना ही है। छोटे बच्चे को भी शिवबाबा से योग लगाना है; क्योंकि अभी सबकी वानप्रस्थ अवस्था है। वापस बाबा के पास जाना है तो क्यों न पूरा वर्सा ले लेवें। राजाई में तो आवेंगे; परंतु पहले नम्बर में तख़्त पर कौन बैठेंगे? 16,108 त्रेता अंत तक प्रिंस–प्रिंसेज़ बन जाते हैं। पिछाड़ी में जो राजाई करेंगे उन्हों को पहले राजाई करने वालों आगे भरी ढोनी पड़ेगी। इसलिए पुरुषार्थ तीखा करना चाहिए। पहले किंग–क्वीन थे। उन्हों का जब कोई जलसा होता था और दरबार में किंग–क्वीन आते थे, तो छोटे–2 राजाएँ उनका पेशगीर उठा चलते थे व घोड़े पर तलवार उठा गार्ड बन चलते थे। यह एक मान है। किंग–क्वीन पास अंदर जो रहेंगे उन्हों का भी मान होगा। वे नम्बरवार राजाई पद पाने वाले हैं। समझानी तो बहुत मिलती है। यत्न कर कब भी कुसंग में न जाना चाहिए। ब्राह्मण बन ब्राह्मणों के संग में रहना चाहिए। कुसंग से बुद्धि मलीन हो जाती है। स्वानेसयाने सपूत बच्चे कहेंगे हम शूद्र का संग क्यों करें। हरेक का अपना–2 हिसाब है। दवाई हरेक की अलग होती है। यह अविनाशी सर्जन है। जो जैसा हो वो अपने लिए राय ले लेवें। बाबा हम राय पर चलने लिए तैयार हैं। यह तो बाप, टीचर, गुरु है। हर प्रकार की राय मिलेगी। तुम बच्चों ने तो गोद ली, कोई तो डरते हैं। बाप को सब बतलावें तो राय भी मिले कि अपनी मिलकियत किस काम में लगाओ। पापात्मा को देने से और ही पाप चढ़ जावेंगे। आजकल तो गरीब को पैसा दो तो जाकर शराब पीयेंगे, गंदा काम करेंगे, तो उसका पाप फिर देने वाले पर आ जाता है। इसलिए सदा पात्र को दान देना चाहिए। गरीब को अन्न और वस्त्र दान दिया जाता है। वस्त्र तो काम में लगावेंगे; परंतु आजकल तो वस्त्र भी बेजकर गंद काम जा करते हैं। बाप कहते हैं, तुम बच्चों को भी अविनाशी ज्ञान का दान पात्र देखकर देना है। शास्त्रों में लिखा हुआ है–देवताओं की सभा में असुर आकर बैठे तो उन्होंने और ही विघ्न डाले। कहाँ–2 सेंटर्स पर कोई शैतान भी घुस पड़ते हैं, उनके लिए ऐसे थोड़े ही कहेंगे अमृत पीने आए हो। कल्प पहले मुआफिक देखते हैं, प्रैक्टिकल में हो रहा है, इसलिए बड़ी खबरादारी रखनी पड़ती है। वो हैं आसुरी सम्प्रदाय, तुम हो दैवी सम्प्रदाय। तो असुर भी विघ्न ज़रूर डालेंगे। बाप सब बातें समझा देते हैं। एक तो निर्भय बनना है और बहुत मीठा बनना है। कोई भी आए तो प्यार से समझा रवाना कर देना चाहिए। तुम इस ज्ञान ..... समझते हो, चले जाओ। यह शिवबाबा का यज्ञ है, इसमें कोई विघ्न न डालना है। शिवबाबा फिर धर्मराज भी है, बहुत कड़ी सज़ा देंगे। कोई–2 तो बातें बना, हम फलाने को जानते हैं, यह करते हैं, ऐसे कर पैसा ले जाते हैं। इसलिए बहुत–बहुत सावधान रहना चाहिए। इस समय तुम बच्चों के कपड़े भी सादे होने चाहिए, नहीं तो मनुष्यों की दृष्टि जावेगी। बाबा ने पहले डायरैक्शन दिये थे–चीथड़े वाले कपड़े पहनो। फैशनदार कपड़े न पहनना चाहिए। हाँ, कहाँ सर्विस अर्थ वेश बदल जा सकते हैं, जो ऐसे न समझें यह बी.के. हैं। ऐसे तुम सन्यासियों की भी सर्विस कर सकते हो। लगा हुआ है ना कि कन्याओं द्वारा बाण मारे हैं। इस समय जब तुम्हारा नाम निकलेगा तो उन्हों का सारा भांडा भूटेगा। गीता,रामायण झूठ सुनाने वालों का भी भांडा फूटेगा। तुम सिद्ध करते हो, सब झूठे हैं। तो जब उन्हों के ग्राहक टूटेंगे तो ज़रूर शत्रु

बनेंगे, गालियाँ देंगे। यह फिर कौन है जो कहते कि गीता का भगवान निराकार है। निराकार कैसे ज्ञान देगा? अरे, आत्मा भी तो निराकार है। आत्मा आ सकती है, भगवान नहीं आ सकते? निराकार ही आकर ज्ञान देते हैं। मुख्य बात ही गीता के भगवान की है। भगवान का पता पड़ जावेगा तो समझेंगे बरोबर इन्हों को सिखलाने वाला भगवान है। वो ज़रूर राइटियस ही होंगे। बाकी सब हैं अनराइटियस। बाबा हमको राइटियस देवता बनाते हैं। युक्ति से पूछना चाहिए, गीता किसने सुनाई? ..... कौन सा धर्म स्थापन किया? भगवान तो ज़रूर नई दुनिया ही क्रियेट करेंगे। कृष्ण द्वापर में आकर नई दुनिया स्थापन कर न सके। भगवान कलियुग अंत में ही आकर नई दुनिया स्थापन करेंगे। यह बात पहले पक्की–2 समझा.... लिखाना चाहिए, तब तो कुछ समझ सकेंगे। जब पूरा निश्चय कर और योग लगावें तब बाबा मदद भी देवें। पहले–2 तो हमको जाना है स्वीट होम, फिर स्वीट राजधानी सुखधाम में आना है। अभी बाबा सुखधाम की राजधानी देते हैं तो लेनी चाहिए। न लेंगे तो तकदीर को लकीर लगा देंगे। समझना चाहिए, अभी हम बैगर टू प्रिंस बनते हैं। भल कोई .... करोड़ पदम है; परंतु वो भी कितना समय चलेगा। सबका धरती में दब जावेगा। हम बाबा पर बलिहार जाते हैं, सरेण्डर होते हैं तो बाबा फिर 21बार बलि चढ़ते हैं। सरेण्डर होते हैं कितना अच्छा सौदा है। धरती हिलना आदि ऐसे–2 इत्फाक तो होते रहेंगे। सबकी एकरस अवस्था नहीं रह सकती। जो पक्के होंगे, वे तो शिवबाबा की याद में रहेंगे तो फिर अंत मते सो गति हो जावेगी। अच्छा, बाप दादा मीठी–2 जगदम्बा का सौभाग्यशाली तकदीर .... खुश नसीब बच्चों को गुडमॉर्निंग। ॥ॐ॥